मैं विरोध करती हूँ!

रुथ बेडर गिन्सबर्ग अपना स्थान बनाती हैं

देब्बी, चित्र : एलिज़ाबेथ

हिंदी : विदूषक

मैं विरोध करती हूँ!

रुथ बेडर गिन्सबर्ग अपना स्थान बनाती हैं

देब्बी, चित्र: एलिज़ाबेथ, हिंदी: विदूषक

Schuster Books for Young Readers

विरोध करो

आप कह सकते हैं कि रुथ बेडर गिन्सबर्ग लोगों से असहमत होने के लिए ही पैदा हुई थी.

पुराने दकियानूसी विचारों का

अन्याय का, असमानता का !

DISAGREEMENT

WITH CREAKY OLD IDEAS.

WITH UNFAIRNESS.

WITH INEQUALITY.

RUTH HAS DISAGREED, DISAPPROVED, AND DIFFERED.

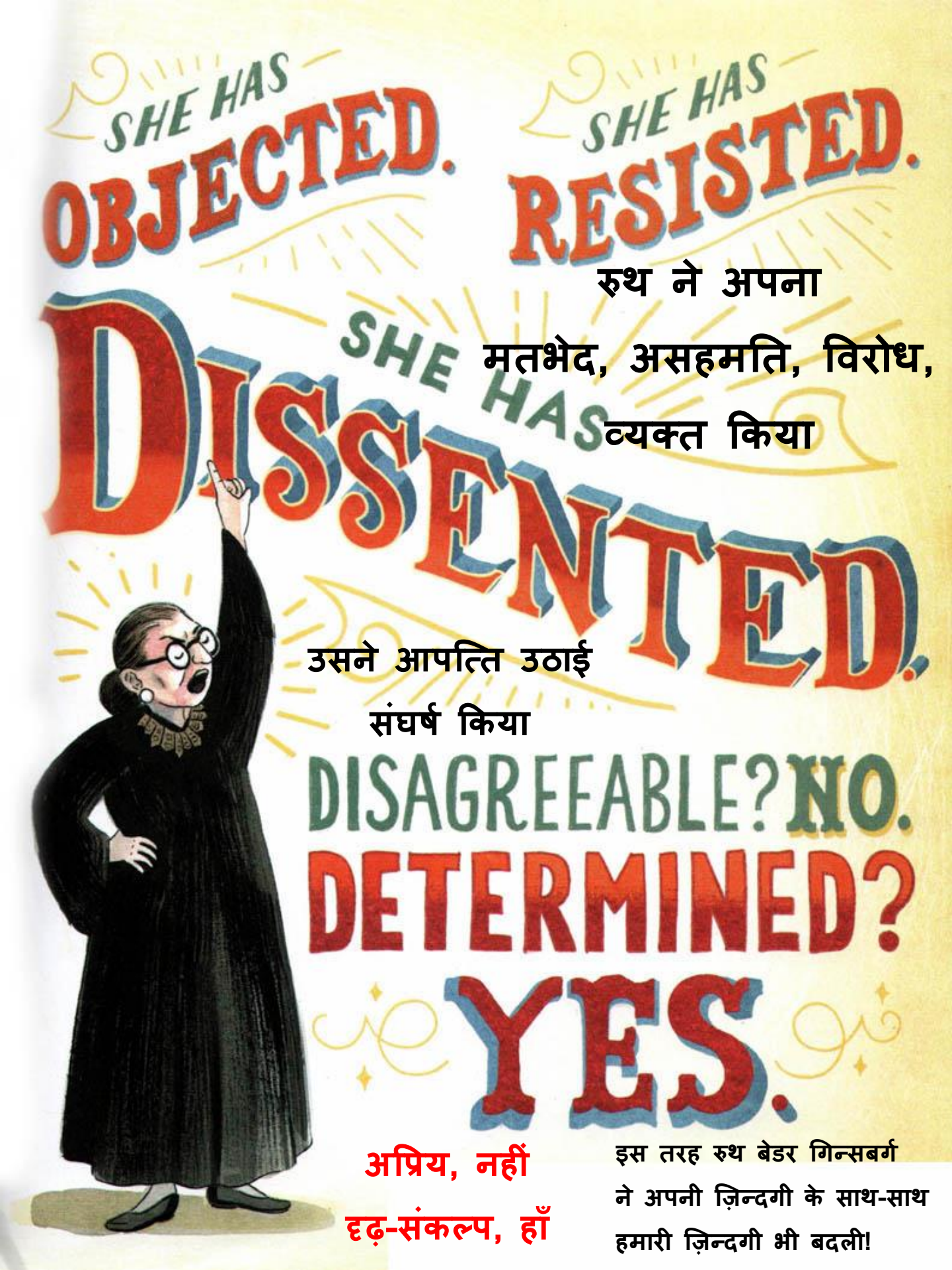

रुथ ने अपना
मतभेद, असहमति, विरोध,
व्यक्त किया

उसने आपत्ति उठाई
संघर्ष किया

अप्रिय, नहीं
दृढ़-संकल्प, हाँ

इस तरह रुथ बेडर गिन्सबर्ग ने अपनी ज़िन्दगी के साथ-साथ हमारी ज़िन्दगी भी बदली!

1940 में, जब रुथ छोटी थी तब उसका पड़ोस अप्रवासियों से भरा था – इटली, आयरलैंड, इंग्लैंड, पोलैंड और जर्मनी से आए लोगों से. उनमें रूस के तमाम यहूदी भी थे – जैसे रुथ के पिता नाथन बेडर. भिन्न-भिन्न मुल्कों के लोगों के अलग-अलग भोजन, छुट्टियाँ और परम्पराएँ थीं.

पर ब्रुकलिन, न्यू-यॉर्क के इन सभी परिवारों में एक बात सामान थी.
वहां लड़कों से अपेक्षा थी कि वे बड़े होकर, दुनिया में बाहर जाकर, बड़े काम करेंगे.
और लड़कियां? लड़कियों से उम्मीद थी कि वे अच्छे पति खोजेंगी.

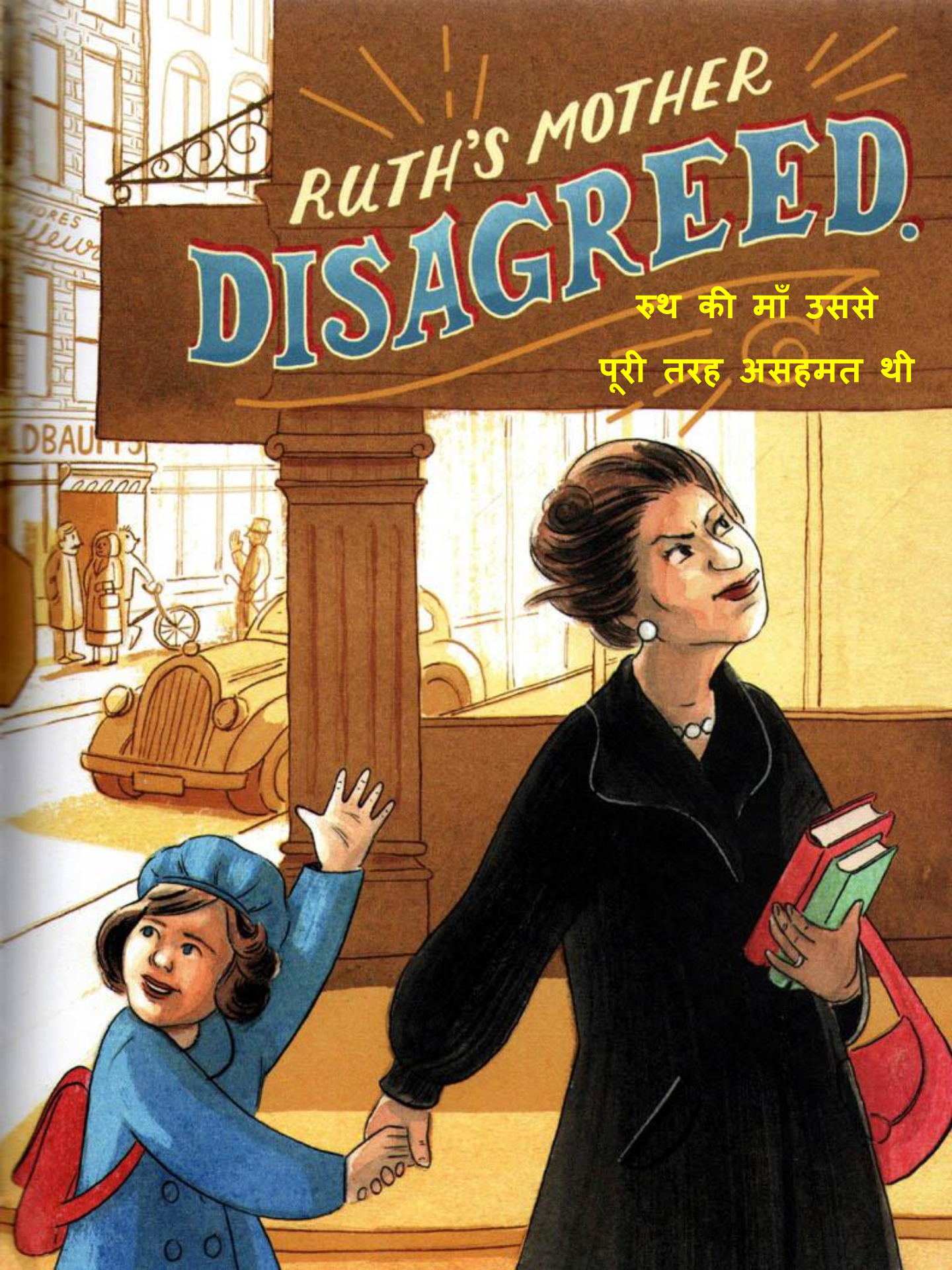
RUTH'S MOTHER
DISAGREED.
रुथ की माँ उससे
पूरी तरह असहमत थी

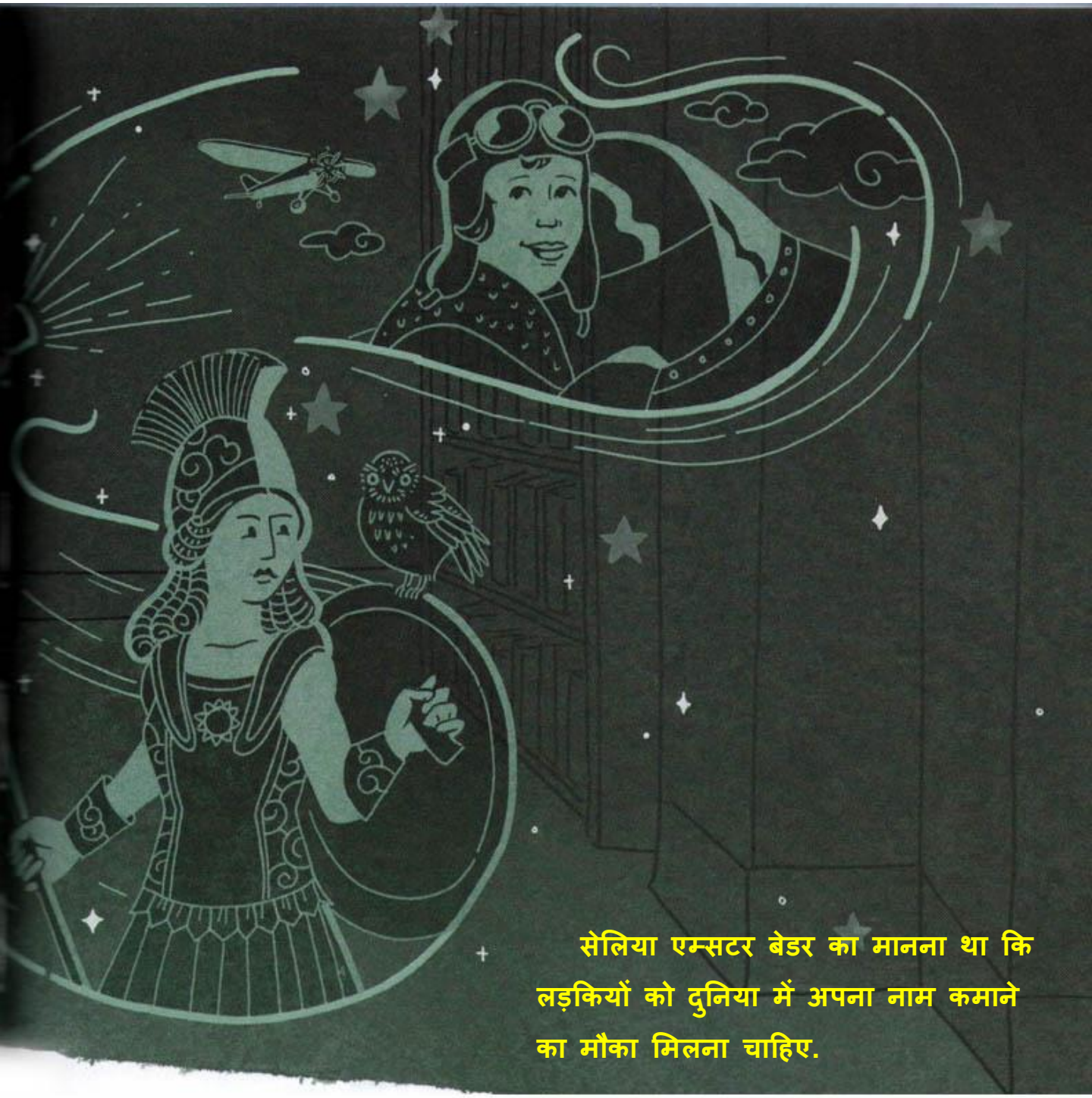

सेलिया एम्सटर बेडर का मानना था कि लड़कियों को दुनिया में अपना नाम कमाने का मौका मिलना चाहिए.

उनका बुकशेल्फ ऐसी किताबों से भरा था जिनमें लड़कियों और महिलाओं ने बड़े-बड़े काम किये थे. रुथ ने महान डिटेक्टिव नैंसी डरू के बारे में पढ़ा. उसने एमेलिया ईयरहार्ट - साहसी विमान चालक के बारे में पढ़ा. उसने यूनान की शक्तिशाली देवी एथेना, के बारे में भी पढ़ा. यह सभी लड़कियां और महिलाएं स्वतंत्र थीं, और उन्होंने अपनी ज़िन्दगी की लगाम खुद अपने हाथों में संभाली थी.

रुथ ने दुनिया भर की किताबें पढ़ीं. एक ओर घर में उसे किताबों की खुशबू आती तो नीचे से चीनी रेस्टोरेंट के स्वादिष्ट भोजन की महक आती. वाह! लड़कियां, जो चाहें कर सकती थीं.

कभी-कभी रुथ के माता-पिता उसे कार में बिठाकर शहर के बाहर घुमाने के लिए ले जाते.

पेनसिलवेनिया में एक होटल के सामने, रुथ को यह साईनबोर्ड दिखा:

कुत्तों और यहूदियों को अन्दर आना वर्जित है!

उन दिनों यही आलम था.

होटल, रेस्टोरेंट्स और कई इलाकों में इस तरह के नोटिस लगे रहते थे.

रुथ और उसका परिवार यहूदी था. यह साफ़-साफ़ नस्लभेद, पूर्वधारणाओं और पक्षपात का मामला था. अब रुथ की बारी थी उसका विरोध करने की. उसे यह शब्द बहुत चुभे और अखरे. नस्लभेद के इस अपमान को, वो कभी नहीं भूली.

प्राथमिक स्कूल में रुथ कुछ चीज़ों में बहुत कुशल और दक्ष थी – कुछ में नहीं. उसके सबसे प्रिय विषय थे – इंग्लिश, इतिहास और व्यायाम. रुथ सब काम बाएं हाथ से करती थी. उस ज़माने में बाएं-हाथ वालों से टीचर्स कहतीं, कि उन्हें दायें हाथ से लिखना चाहिए. दाएँ-हाथ से लिखने के लिए बाध्य किये जाने से रुथ की लिखाई इतनी ख़राब हो गई कि उसे लिखाई में सबसे निचला "D" ग्रेड मिला.

इतने कम नंबर देखकर रुथ रोई.

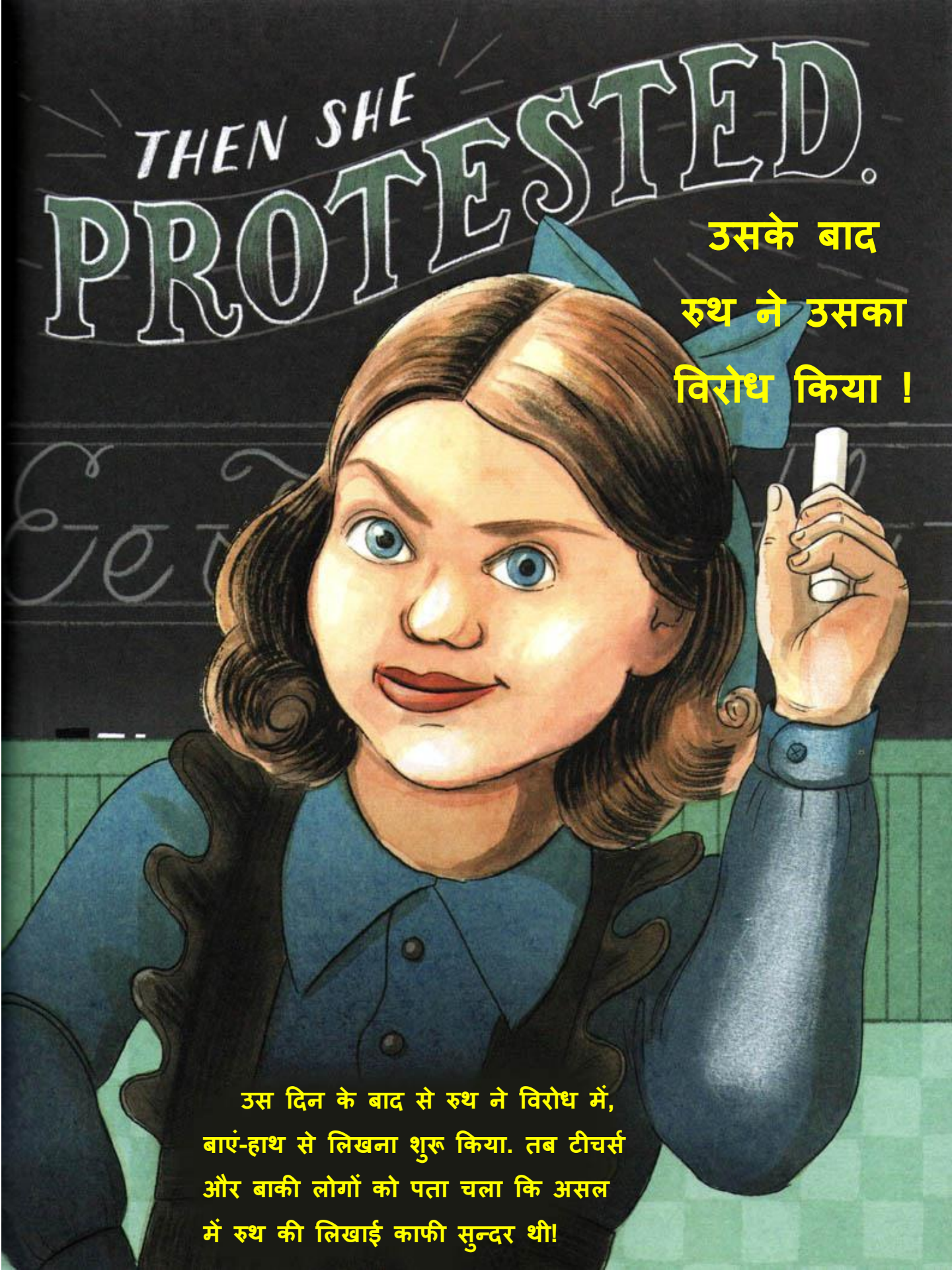
THEN SHE
PROTESTED.
उसके बाद
रुथ ने उसका
विरोध किया !
उस दिन के बाद से रुथ ने विरोध में,
बाएं-हाथ से लिखना शुरू किया. तब टीचर्स
और बाकी लोगों को पता चला कि असल
में रुथ की लिखाई काफी सुन्दर थी!

रुथ को सिलाई और खाना पकाने के कामों से परहेज़ था. इन कक्षाओं में उसका बिल्कुल मन नहीं लगता था. परन्तु सिलाई और खाना पकाना लड़कियों के लिए अनिवार्य विषय थे. लड़के, बढ़ईगीरी सीख सकते थे और वे औजारों से काम करते थे.

रुथ ने उसका भी विरोध किया

रुथ भी बढ़ईगीरी सीखना चाहती थी. वो अपने हाथों से आरी चलाना सीखना चाहती थी!

रुथ जो चाहती थी, वो उसे मिला नहीं. लड़कियों के साथ यह सरासर अन्याय था! इस अन्याय को रुथ, ज़िन्दगी के असली अनुभवों से सीख रही थी.

रुथ को संगीत से प्रेम था – विशेषकर ओपेरा संगीत से. संगीत की क्लास में वो ऊंचे स्वर में, गला खोलकर गाती थी.

इस बार रुथ के गाने पर उसकी संगीत टीचर ने आपत्ति जताई. “थोड़ा धीमे गाओ,” उन्होंने कहा. जब रुथ ने धीमे स्वर में गाना शुरू किया तो गाने की लय ही बिगड़ गई. टीचर ने रुथ को, संयुक्त-गान में, ज़ोर से गाने से मना किया.

रुथ इन फिर भी अपना गाना ज़ारी रखा – गुसलखाने में और अपने सपनों में. ओपेरा संगीत से भी उसका लगाव ज़ारी रहा.

जब तक रुथ हाई-स्कूल में पहुंची, तब तक उसके मित्रों और टीचर्स को पता चल चुका था कि रुथ एक असाधारण छात्र, म्यूजिक कंडक्टर, चेलो वादक और अखबार की संपादक थी. स्नातक समारोह में रुथ को मुख्य भाषण देने के लिए चुना गया. रुथ इतने समय तक एक बड़े रहस्य को छिपाए रही कि उसकी माँ बहुत सख्त बीमार थीं. स्नातक समारोह के एक दिन पहले सेलिया बेडर, यानि रुथ की माँ का देहांत हो गया.

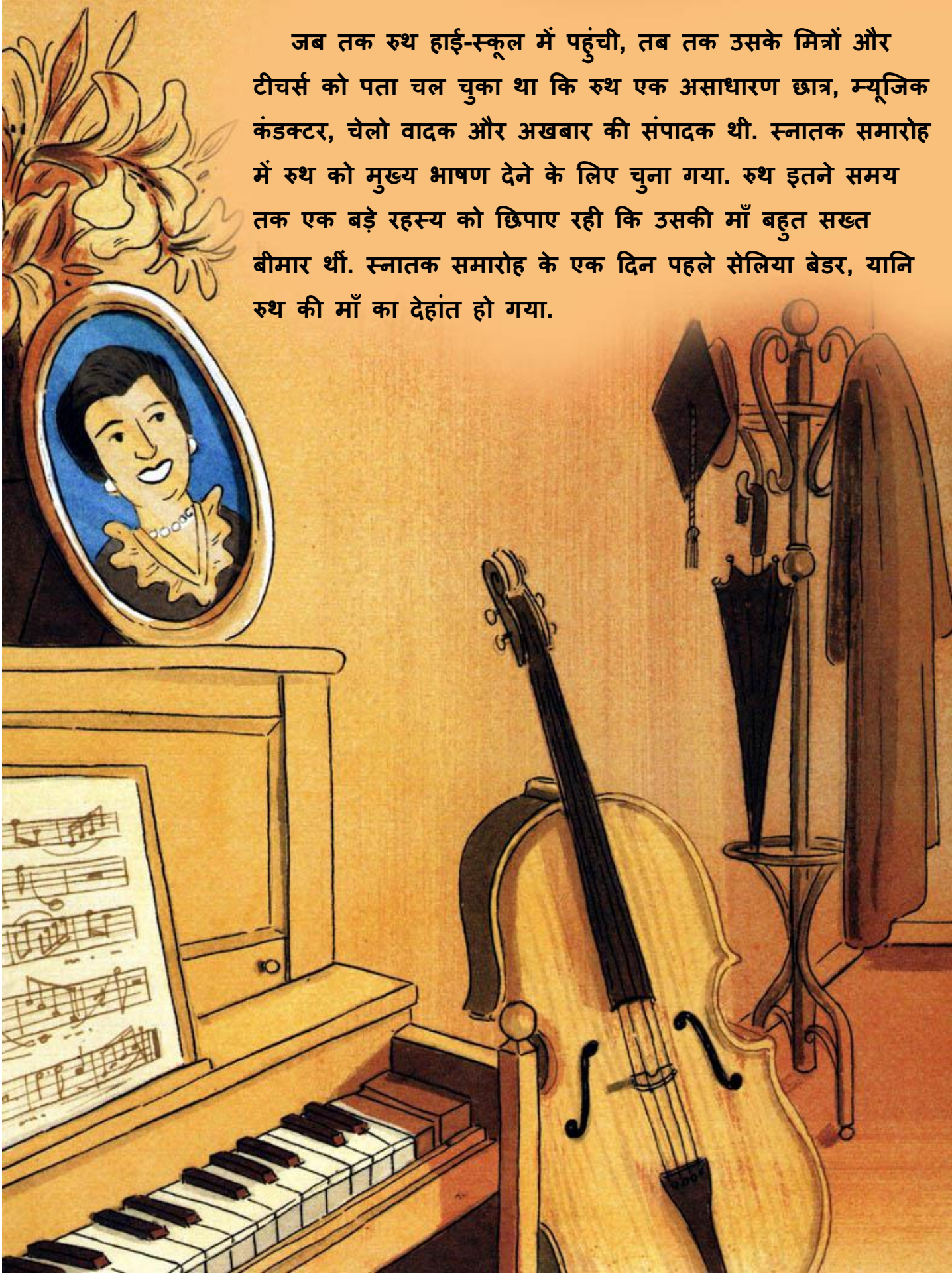

इसमें मानने, न-मानने, की कोई बात ही नहीं थी. रुथ, स्नातक समारोह में नहीं जा पाई. वो अपना भाषण भी नहीं दे पाई. रुथ को अच्छी तरह पता था, कि माँ की उससे क्या अपेक्षाएं थीं. तीन महीने बाद रुथ घर छोड़कर गई और उसने कॉलेज में दाखिला लिया.

1950 के दशक में, बहुत लड़कियां कॉलेज नहीं जाती थीं. रुथ ने कई नये मित्र बनाए. वो उन लड़कियों से भी मिली जो यहूदिओं को अपने ग्रुप में शामिल नहीं करती थीं. वो ऐसे बहुत लड़कों से भी मिली जिनके विचार में लड़कियों का काम सिर्फ पति खोजना था. अंत में रुथ की मुलाक़ात मार्टिन गिन्सबर्ग से हुई – प्यार से लोग उसे मार्टी बुलाते थे.

मार्टी ऊंचा और बहुत मजाकिया था. रुथ बहुत गंभीर और छोटी थी. मार्टी, रुथ को हंसा सकता था. उन दोनों में प्रेम हुआ और उन्होंने मिलकर एक योजना बनाई. कॉलेज ख़त्म होने के बाद दोनों ने वकालत का कोर्स करने का निश्चय किया. रुथ को लगा कि वकील बनने के बाद वो कोर्ट-कचेहरी में पक्षपात, अन्याय और अनुचित बातों से लड़ सकेगी.

लोगों ने मार्टी द्वारा वकालत किये जाने का तो स्वागत किया. पर रुथ वकालत क्यों कर रही थी? एक महिला वकील? लोगों को वो बात मंज़ूर नहीं थी.

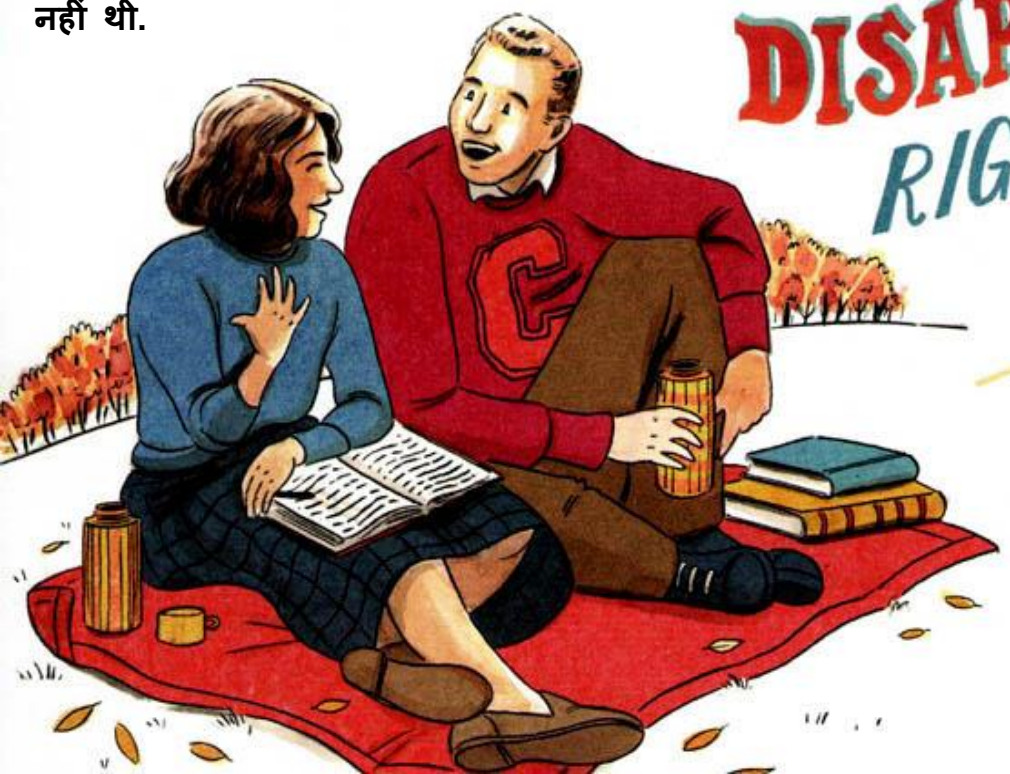

रुथ ने उनकी बात को तुरंत नामंज़ूर किया. मार्टी ने भी.

रुथ और मार्टी ने शादी की.
फिर दोनों ने वकालत पढ़ी.
उनकी एक बच्ची हुई – जेन.
LAW

वकालत की क्लास में रुथ के साथ, सिर्फ 9 लड़कियां थीं, पर 500 लड़के थे. रुथ ने बहुत मेहनत की और अपनी क्लास में प्रथम आई. फिर भी स्नातक की डिग्री के बाद किसी ने भी इस काबिल वकील को नौकरी नहीं दी. क्यों नहीं? क्योंकि वो एक लड़की, एक महिला थी. तब मर्द, औरतों के साथ काम नहीं करना चाहते थे. रुथ एक माँ थी. मर्दों का मानना था कि कोई भी माँ, अपने काम पर ध्यान नहीं देगी. रुथ यहूदी थी. लोगों के दिमागों में नस्लवाद कूट-कूट कर भरा था. रुथ को तीन लड़ाईयां एक साथ लड़नी थीं. रुथ उनसे बिल्कुल घबराई नहीं.

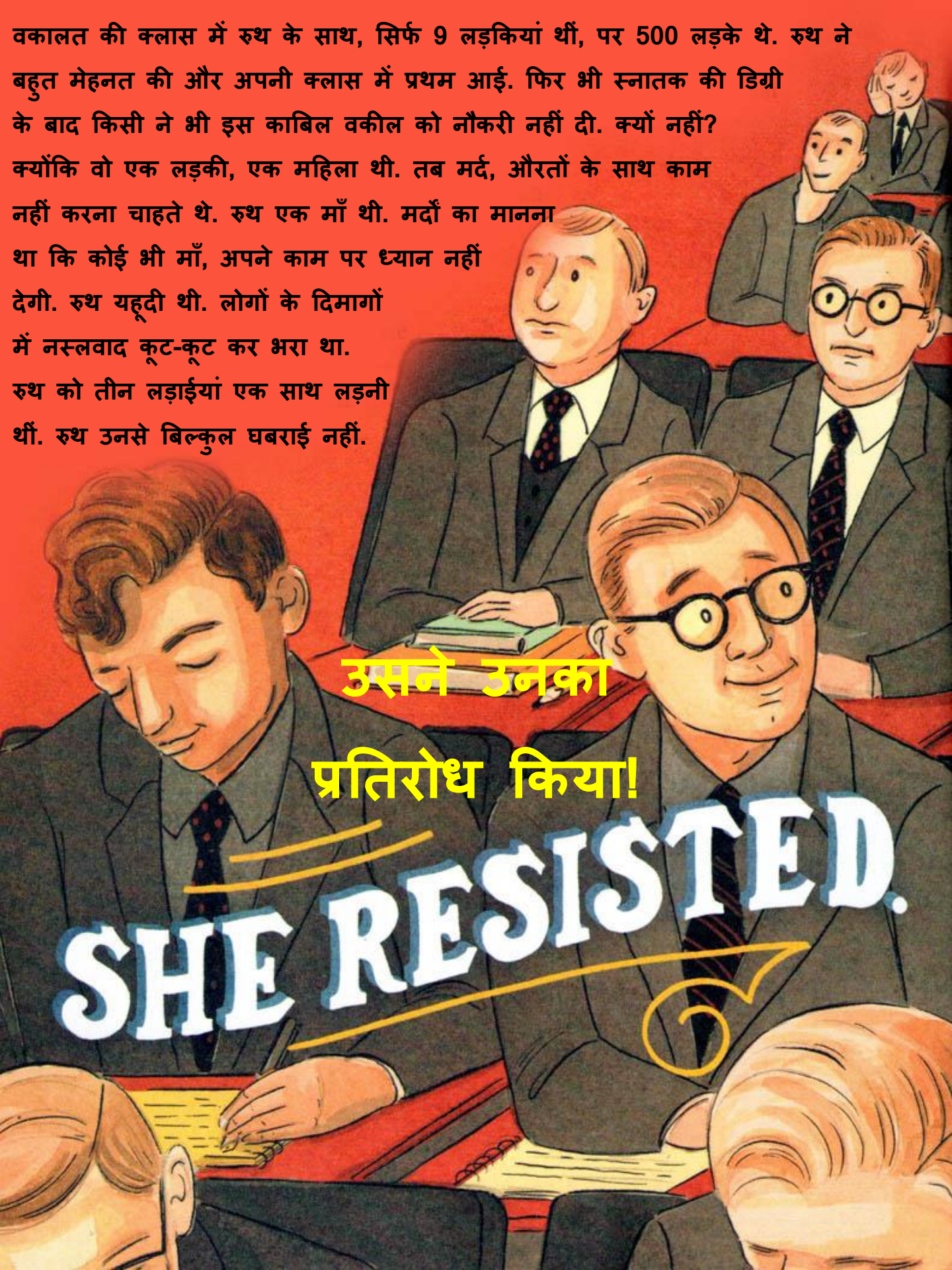

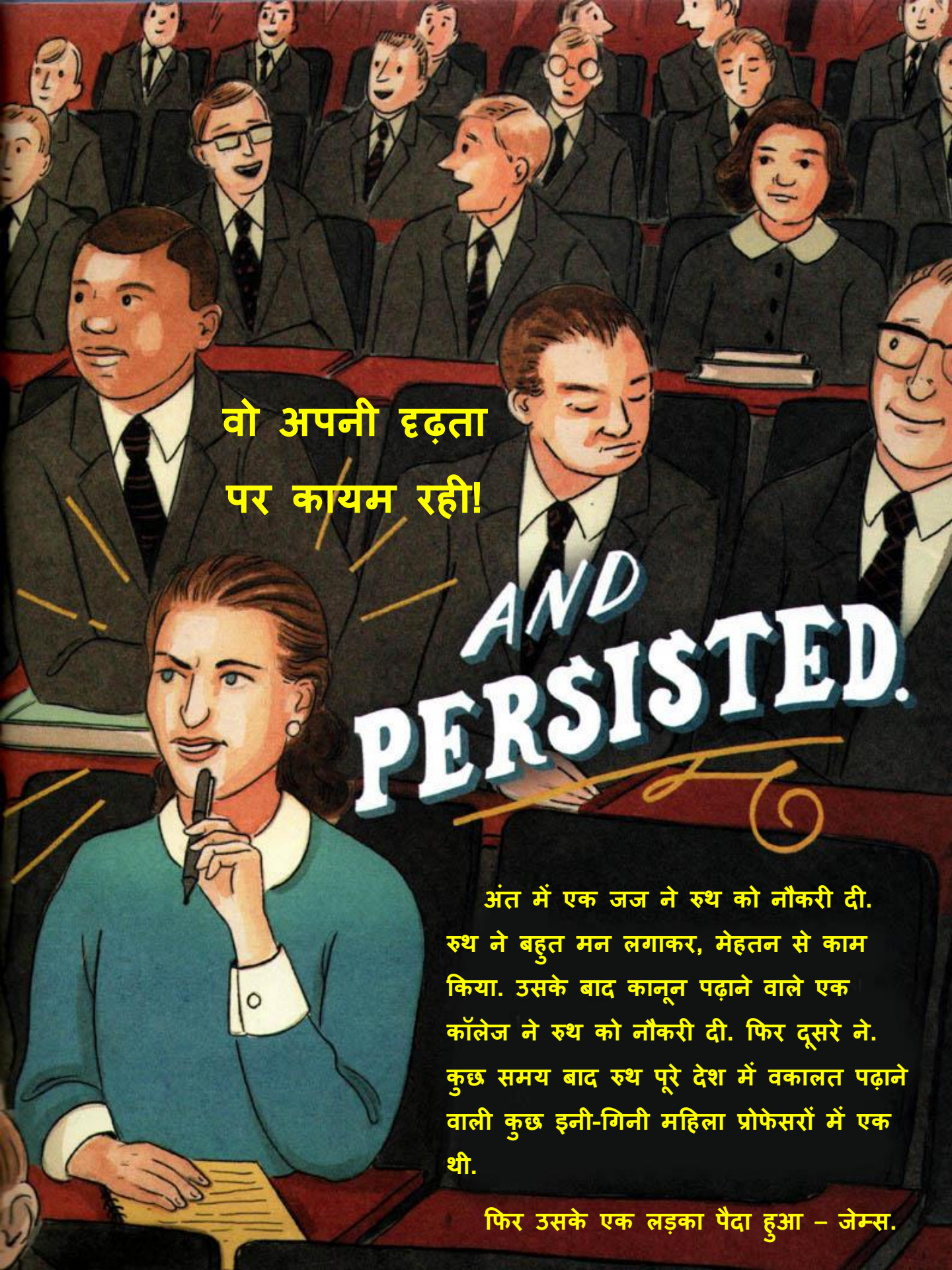

अंत में एक जज ने रुथ को नौकरी दी. रुथ ने बहुत मन लगाकर, मेहतन से काम किया. उसके बाद कानून पढ़ाने वाले एक कॉलेज ने रुथ को नौकरी दी. फिर दूसरे ने. कुछ समय बाद रुथ पूरे देश में वकालत पढ़ाने वाली कुछ इनी-गिनी महिला प्रोफेसरों में एक थी.

फिर उसके एक लड़का पैदा हुआ – जेम्स.

रुथ ने लोगों से अपनी असहमति ज़ाहिर की, विरोध किया, पर उसके बावजूद वो एक बड़ी वकील और प्रोफेसर बनी. उसने देखा कि चारों ओर महिलायों को, नौकरियों से दूर रखा जाता था. और जब औरतों को नौकरियां मिलती भी थीं तब उनका वेतन, मर्दों की अपेक्षा कम होता था. महिलायों को, कोर्ट-कचेहरी और सरकारी नौकरियों से बिल्कुल दूर रखा जाता था.

इन मामलों को और बदतर बनाया अमरीका के सुप्रीम कोर्ट ने – जिसने इस भेदभाव को अपनी स्वीकृति दी. सालों पहले सुप्रीम कोर्ट के एक जज ने लिखा:

महिलाओं की प्राकृतिक विनम्रता और भीरुता, उन्हें नागरिक जीवन के कई कामों के लिए अयोग्य बनाती है.

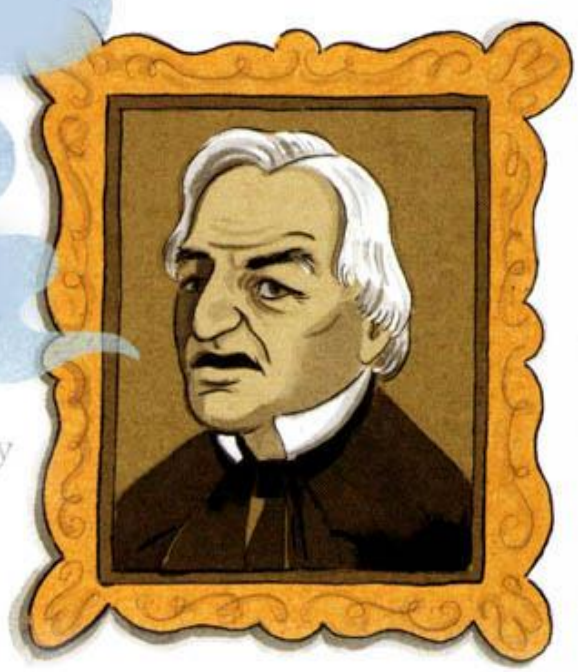

दूसरे शब्दों में: महिलाएं और लड़कियां, दुनिया के बड़े कार्य करने के लिए बेहद शर्मीली और अयोग्य हैं.

सुप्रीम कोर्ट की एक अन्य राय के अनुसार:

महिलाएं हमेशा से मर्दों पर ही निर्भर रही हैं.

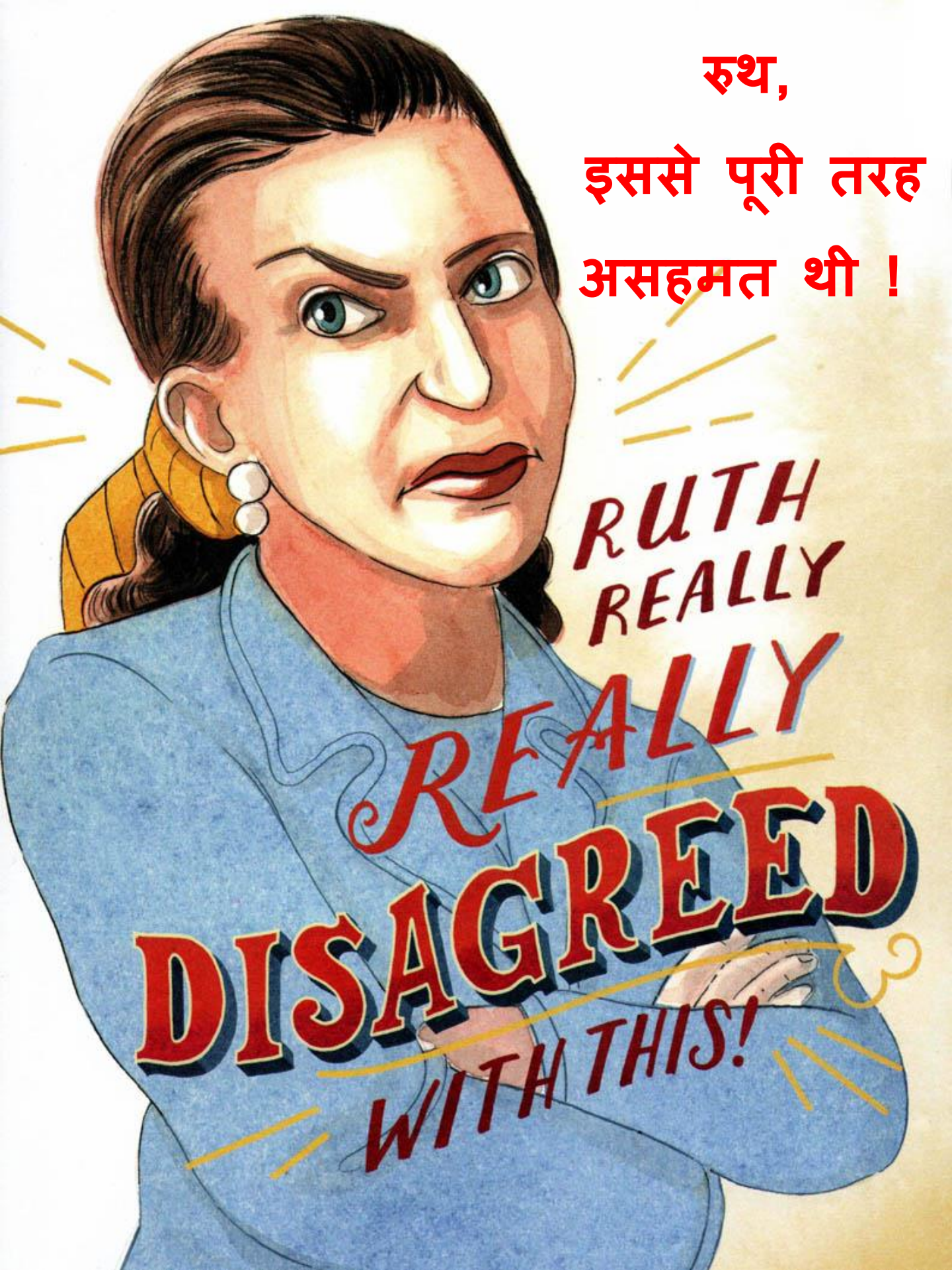
रुथ,
इससे पूरी तरह
असहमत थी !
RUTH
REALLY
REALLY
DISAGREED
WITH THIS!

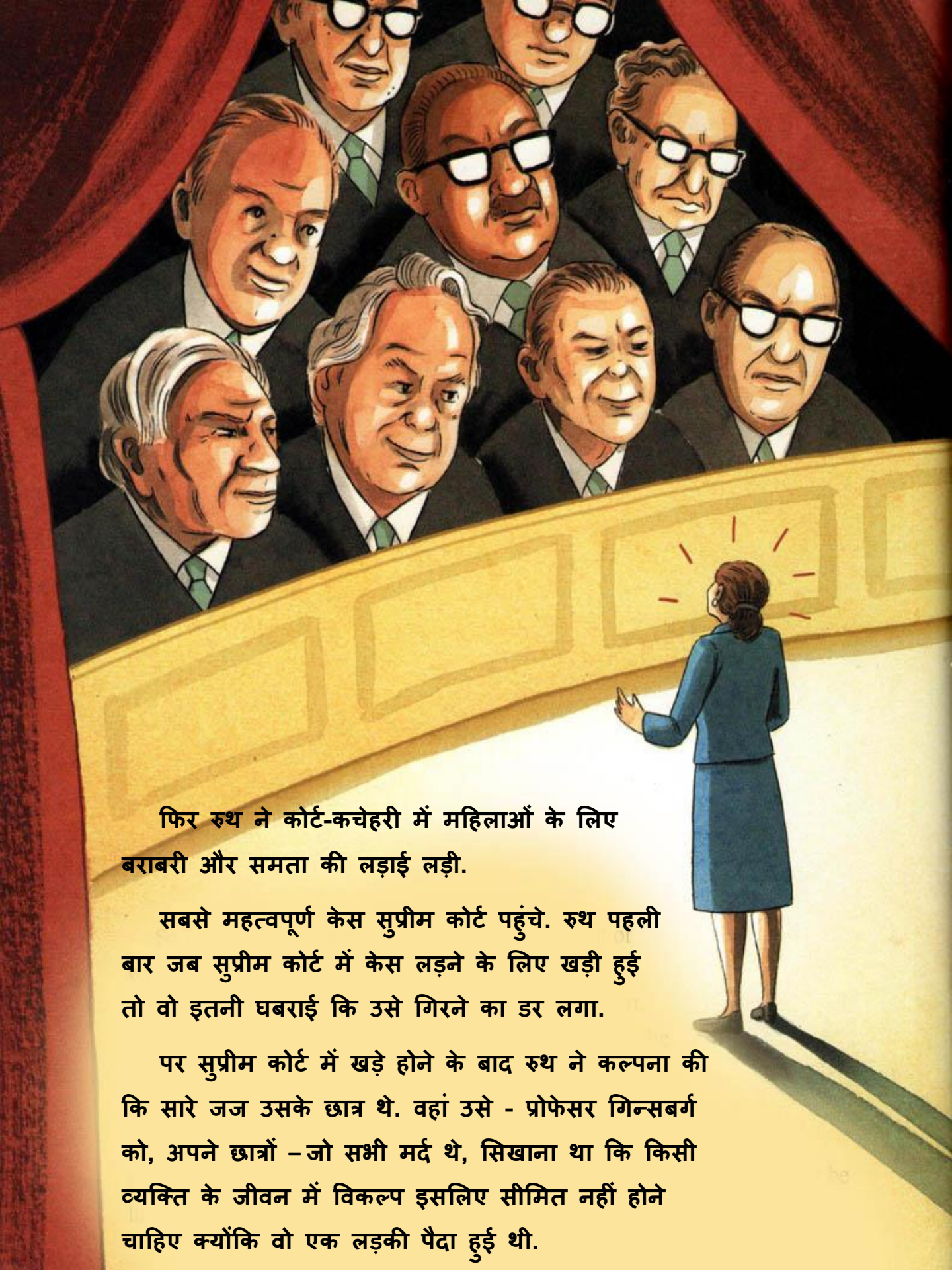

फिर रुथ ने कोर्ट-कचेहरी में महिलाओं के लिए बराबरी और समता की लड़ाई लड़ी.

सबसे महत्वपूर्ण केस सुप्रीम कोर्ट पहुंचे. रुथ पहली बार जब सुप्रीम कोर्ट में केस लड़ने के लिए खड़ी हुई तो वो इतनी घबराई कि उसे गिरने का डर लगा.

पर सुप्रीम कोर्ट में खड़े होने के बाद रुथ ने कल्पना की कि सारे जज उसके छात्र थे. वहां उसे - प्रोफेसर गिन्सबर्ग को, अपने छात्रों – जो सभी मर्द थे, सिखाना था कि किसी व्यक्ति के जीवन में विकल्प इसलिए सीमित नहीं होने चाहिए क्योंकि वो एक लड़की पैदा हुई थी.

रुथ केवल महिलाओं की लड़ाई ही नहीं लड़ रही थी. जहाँ एक ओर महिलाओं को नौकरियों से वंचित रखा जा रहा था वहीँ पुरुषों को घर-गृहस्थी के काम से दूर रखा जा रहा था. पिता, घर में रहकर बच्चों की देखभाल क्यों नहीं करते, खाना क्यों नहीं पकाते? पत्नी कोई धंधा या उद्योग क्यों नहीं चलाती? 1970 के दशक में, यह नए और क्रांतिकारी विचार थे.

रुथ ने सभी केस तो नहीं जीते, पर फिर भी उसने काफी केस जीते. रुथ की हरेक जीत के साथ औरतों-मर्दों ने, लड़कों-लड़कियों ने, ज्यादा बराबरी और समता महसूस की.

अक्सर जब रुथ और मार्टी के बच्चे लोगों को बताते कि उनकी माँ सुप्रीम कोर्ट में केस लड़ती हैं और पिताजी घर में खाना पकाते हैं, तो लोग बड़े अविश्वास की नज़र से उन्हें देखते. लोगों को औरत-मर्द के रोल का उल्टा-पलटा होना, बड़ा अजीब सा लगता था.

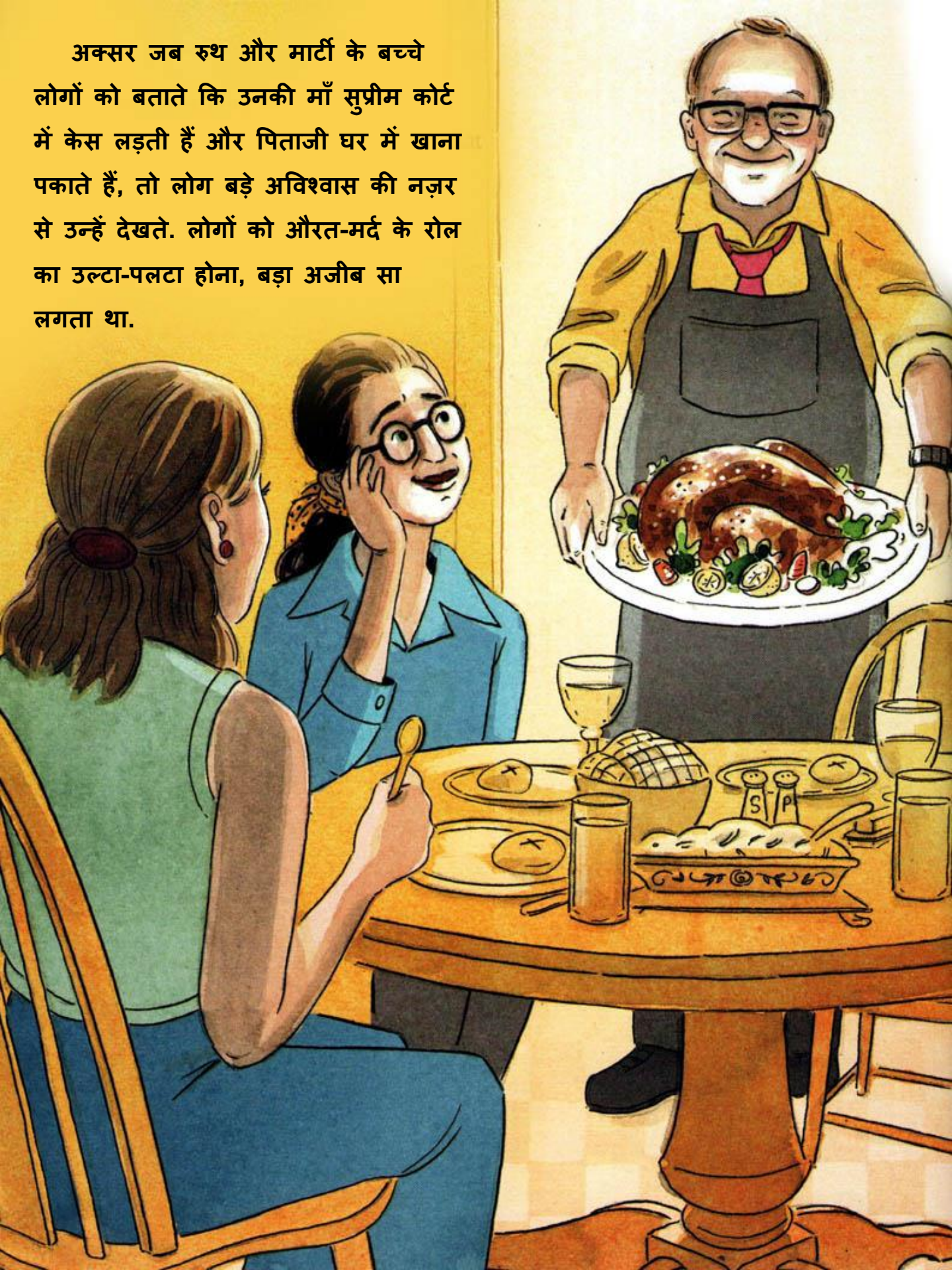

रुथ, मार्टी, जेन और जेम्स के विचार
एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे.

RUTH, MARTY, JANE, AND JAMES
DID NOT CONCUR.

वो लोग शायद वैसा ही परिवार चाहते थे – जहाँ लोगों के विचार स्वतंत्र और अलग हों.

गिन्सबर्ग परिवार में हमेशा बढ़िया खाना मिलता था. मार्टी एक सफल वकील होने के साथ-साथ एक बहुत उम्दा बावर्ची भी था. फ्रेंच भोजन, उसकी विशेषता थी.

दूसरी ओर, पूरा परिवार जानता था कि रुथ, हमेशा खाने को जलाती थी.

रुथ एक बहुत प्रसिद्ध वकील बनी. वो इतनी मशहूर हुई कि प्रेसिडेंट जिमी कार्टर ने उसे वाशिंगटन डीसी. में जज नियुक्त किया.

फिर क्या - एक जज की हैसियत से भी रुथ ने, बहुत नाम कमाया. उसके बाद प्रेसिडेंट बिल क्लिंटन ने रुथ को, सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस नियुक्त किया. अब रुथ का काम आठ अन्य जजों के साथ मिलकर, अमरीका के सर्वोच्च और सबसे महत्वपूर्ण कानूनी प्रश्नों का उत्तर खोजना था.

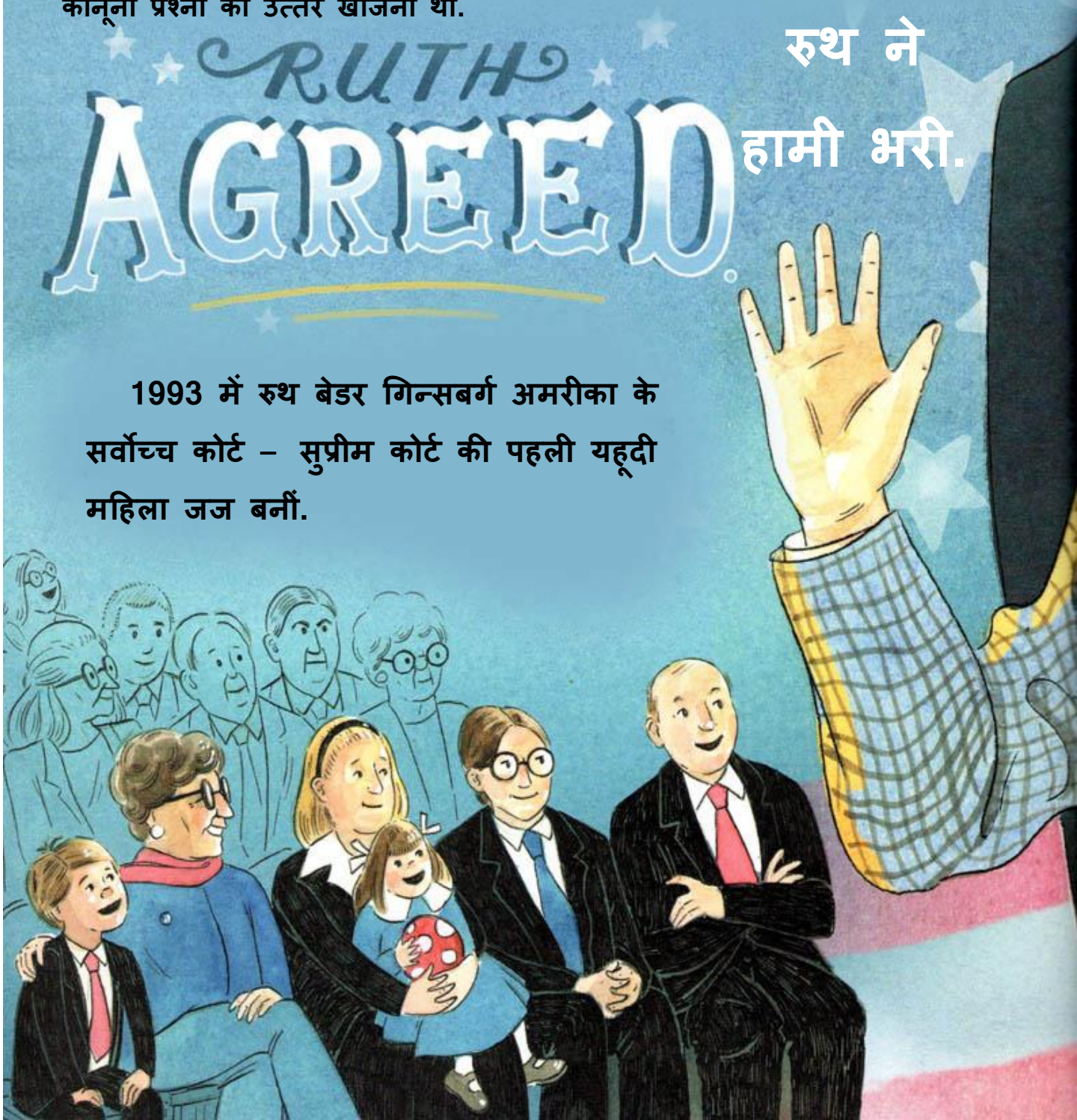

1993 में रुथ बेडर गिन्सबर्ग अमरीका के सर्वोच्च कोर्ट – सुप्रीम कोर्ट की पहली यहूदी महिला जज बनीं.

सुप्रीम कोर्ट हर किसी केस में, दोनों पक्षों के वकीलों के तर्क सुनता है. उसके बाद सभी नौ जज मिलकर उस केस पर अपने मत देते हैं. जिस पक्ष को ज्यादा वोट मिलते हैं, अंत में वही जीतता है. एक-सामान मत वाले जज मिलकर कोर्ट का निर्णय लिखते हैं. जब जस्टिस गिन्सबर्ग, जीतने वाले के पक्ष में वोट करती हैं तब वो अपने विशेष लिबास (रोब) के ऊपर के खास कालर पहनती हैं. पर अक्सर जब सुप्रीम कोर्ट अपना निर्णय सुनाता है .....

तब जस्टिस गिन्सबर्ग

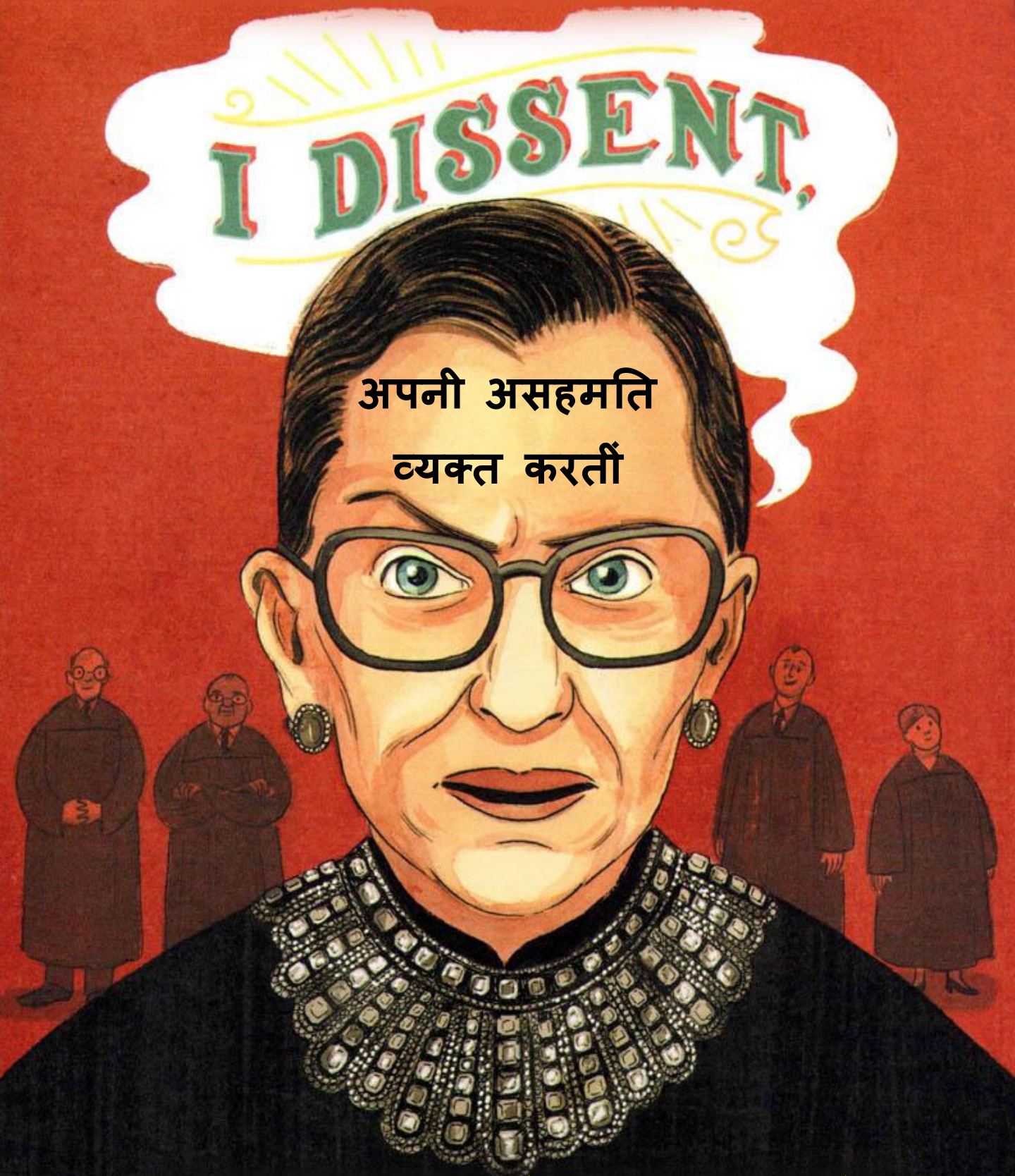

अपनी असहमति
व्यक्त करतीं

अपनी असहमति व्यक्त करती हैं और फिर वो बताती हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों किया. वो असहमित व्यक्त करते वक्त एक विशेष कालर पहनती थीं.

मैं असहमत हूँ !

I DISSENT.

– जब कोर्ट ने कहा कि वो एफ्रो-अमरीकी, अप्रवासियों महिलाओं पर हुई ज्यादतियों पर मदद नहीं करेगा.

मैं असहमत हूँ !

I DISSENT.

– जब कोर्ट ने उस कानून का बहिष्कार किया जो हर व्यक्ति को वोट कर अधिकार देता था - उसकी चमड़ी का रंग के बावजूद.

कार्य स्थल पर बराबरी

सबके लिए सामान अधिकार

मैं असहमत हूँ

–जब कोर्ट ने उन स्कूलों पर पाबन्दी लगाई जो एफ्रो-अमरीकी (अश्वेत) बच्चों को कॉलेज में भेजने के बेहतर तरीके उपयोग करते थे.

जस्टिस गिन्सबर्ग अपने तर्क को बहुत दृढता से पेश करती थीं. अपनी एक असहमति में – जो औरत-मर्द के बीच समान काम के लिए, समान वेतन की लड़ाई थी, उन्होंने कोर्ट को उसकी गलतियों से अवगत कराया. फिर अमरीकी कांग्रेस और प्रेसिडेंट ने, उनके तर्क से सहमत होकर एक नया बराबरी का कानून पास किया और पहले वाले कानून को रद्द किया.

जस्टिस गिन्सबर्ग अब सुप्रीम कोर्ट की सबसे वरिष्ठ और उमर दराज़ सदस्य हैं. कुछ लोगों के हिसाब से उन्हें अब अपनी उम्र का लिहाज़ करते हुए, सुप्रीम कोर्ट छोड़ देना चाहिए.

जस्टिस गिन्सबर्ग उनकी बात से असहमत हैं.

वो बहुत मेहनत से काम करती हैं. वो जिम में जाकर व्यायाम करती हैं. वो कोर्ट में एक दिन का भी नागा नहीं करती हैं. वो ओपेरा में संगीत सुनने जाती हैं, भाषण देती हैं और यात्रा करती हैं.

बहुत से लोगों ने जस्टिस गिन्सबर्ग की दृढता और उनकी स्वतंत्रता की प्रशंसा भी की है. उन्होंने जस्टिस गिन्सबर्ग को कई ख़िताब दिए हैं – रॉक-स्टार, महारानी, देवी और हीरो!

यह सच है कि जस्टिस गिन्सबर्ग कोई रॉक-स्टार, महारानी या देवी नहीं हैं.

पर वो, तमाम लोगों की हीरो ज़रूर हैं!

वो बहुत सारे परिवर्तन लाने में सफल हुईं, और उन्होंने लोगों के दिमागों को बदला.

उन्होंने दूसरों के चलने के लिए एक नया रास्ता प्रशस्त किया – कॉलेज की लड़कियां, कानून पढ़ रही महिलाएं, और ऐसा हरेक व्यक्ति जो भेदभाव के बिना जीना चाहता है.

उनकी आवाज़ में संगीत की धुन भले ही न हो, पर उसमें बराबरी और समता की लय ज़रूर है.

ज़िन्दगी के हर चरण में वो कोई-न-कोई परिवर्तन लाई हैं.....

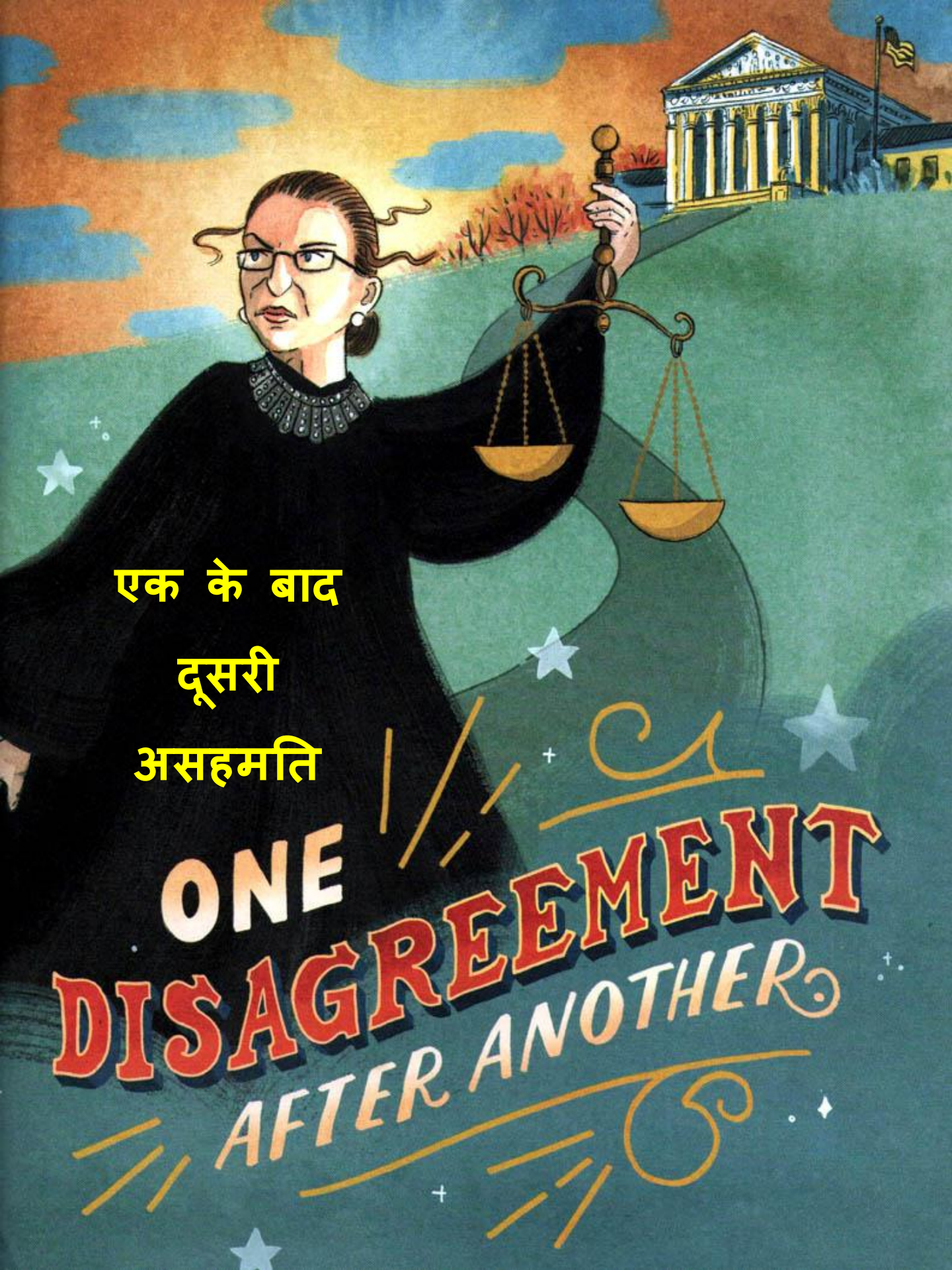
एक के बाद
दूसरी
असहमति
ONE
DISAGREEMENT
AFTER ANOTHER

रुथ बेडर गिन्सबर्ग के बारे में कुछ और जानकारी

कुछ सालों पहले लोगों का मानना था कि मर्दों की तुलना में महिलाएं अच्छी "लीडर" नहीं बनती हैं – वे बिज़नस और सरकार में महत्वपूर्ण निर्णय नहीं ले पाती हैं. महिलाओं को तीन चीज़ें करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था – पति खोजना, बच्चे पैदा करना और घर का काम करना. साथ में लोग यह भी मानते थे कि मर्द बच्चों की अच्छी तरह देखभाल नहीं कर सकते थे. 1930 और 1940 के इस प्रकार के माहौल में रुथ बेडर गिन्सबर्ग बड़ी हुईं.

कुछ परिवर्तनों ज़रूर आए. पर यह सीमाएं 1950,1960 और 1970 के दशकों में भी रहीं. अब पहले से ज्यादा संख्या में महिलाएं घर से बाहर काम पर जाने लगीं थीं. पर अभी भी उनका रोल बहुत सीमित था. महिलाएं – टीचर, नर्स और एयरलाइन में सहायक बन सकती थीं. पर बहुत कम महिलाएं ही, कॉलेज में प्रोफेसर, डॉक्टर या हवाई-जहाज़ की पायलट बन सकती थीं.

पर कुछ लोग ऐसे थे, जिन्हें महिलाओं के इस सीमित रोल पर गुस्सा आता था. महिलाओं की पुरुषों के साथ, बराबरी की लड़ाई बहुत पहले ही शुरू हुई थी. उसकी अगुवाई सुज़न बी. अन्थोव्य (1820-1906), एलिसबेथ काडी स्टेनटन (1815-1902), सोजौर्न ट्रुथ (1797-1883) और अन्य महिलायों ने की थी. इस लड़ाई को आगे रुथ बेडर गिन्सबर्ग ने जारी रखा.

रुथ का जन्म 15 मार्च, 1933 को ब्रुकलिन, न्यू-यॉर्क में हुआ. रुथ के पिता नाथन बेडर, कपड़े के कारोबारी थे. वो जानवरों के फर के कोट और हैट बनाते और बेंचते थे. रुथ की माँ - सेलिया एम्सटर बेडर घर और परिवार की देखभाल करती थीं. लड़कियों की पढ़ाई और उनके पेशों के बारे में सेलिया के विचार बहुत प्रगतिशील थे, और उनका रुथ के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा. रुथ ने अपने माँ के बारे में लिखा – "वो बेहद तेजस्वी थीं और उन जैसा साहसी व्यक्ति अपनी ज़िन्दगी में मुझे और कोई नहीं मिला."

दुर्भाग्यवश सेलिया का देहांत जून 1950 में तब हुआ जब रुथ हाई स्कूल पास कर रही थी. बेडर परिवार के लिए यह पहली शोकपूर्ण घटना नहीं थी. रुथ की एक बड़ी बहन थी मैरीलिन – वो तब चल बसी, जब रुथ बिल्कुल छोटी बच्ची थी.

माँ की मृत्यु से रुथ को बहुत धक्का लगा. पर उसे पता था कि माँ चाहती थीं कि वो अपनी पढ़ाई ज़ारी रखे. फिर सेलिया की मृत्यु के तीन महीने बाद रुथ ने कॉर्नेल यूनिवर्सिटी, न्यू-यॉर्क में दाखिला लिया. वो आगे क्या करेगी, शुरू में उसे यह स्पष्ट नहीं था. यह 1950 का दशक था. उस समय अमरीका में कुछ नेता – विशेषकर जोसफ मिकार्थी, लोगों के स्वतंत्र सोच और बोलने की आज़ादी पर लगाम लगा रहे थे. जो लोग सरकारी मत से सहमत नहीं थे उन्हें चुप कराया जा रहा था, जेलों में डाला जा रहा था.

कॉर्नेल में अपने एक प्रोफेसर से रुथ ने सीखा कि वकील इन अन्यायों के खिलाफ, कोर्ट-कचेहरी में लड़ सकते थे. वकील कोर्ट में भेदभाव से भी लड़ सकते थे. जब रुथ ने एक होटल के बाहर यह साईनबोर्ड देखा – "कुत्ते और यहूदी वर्जित" तब उसने वकील बनने की ठानी.

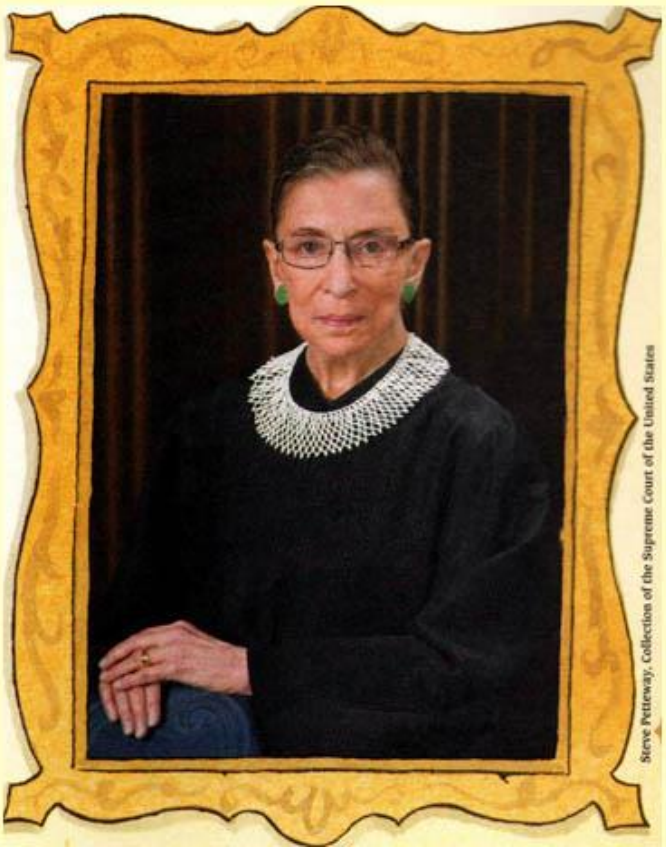

1956 में रुथ ने, कानून पढ़ाने वाले स्कूल में दाखिला लिया. उसने हार्वर्ड लॉ स्कूल, कैंब्रिज, से शुरुआत की और बाद में कोलंबिया लॉ स्कूल में न्यू-यॉर्क सिटी में पढ़ी. यह अमरीका के सबसे प्रसिद्ध लॉ स्कूल हैं. 1959 में, अपने बैच में प्रथम आने के बावजूद रुथ को पढ़ाई ख़त्म करने के बाद, पहली नौकरी मिलने में बहुत दिक्कत हुई. अंत में जज एडमंड पल्मिएरी ने उसे नौकरी दी. जज साहिब और अन्य वकीलों को जल्द ही रुथ की क़ाबलियत समझ में आई. पहले जिन कंपनियों ने रुथ को नौकरी देने से इंकार किया था अब वे सभी उसे नौकरी देने को आतुर थे. पर अब रुथ की रूचि पढ़ाने में थी. 1963 में रुथ, अमरीका के रुत्जेर्स लॉं कॉलेज में पहली महिला प्रोफेसर बनी. 1972 के बाद में उन्होंने कोलंबिया लॉ स्कूल में पढ़ाया.

लॉ स्कूल में जब रुथ प्रोफेसर थीं तब वो महिलाओं की बराबरी की लड़ाई में शामिल हुईं. उन्होंने *अमेरिकन सिविल लिबर्टीज यूनियन* के साथ काम किया. इस संस्था का मिशन अमरीकी संविधान में दिए नागरिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए लड़ना था. संविधान की व्याख्या में अगर कोई मतभेद हो तो उसका निदान कोर्ट में होता था – जिसमें अमरीका का सुप्रीम कोर्ट, शीर्ष पर था.

वकील कोर्ट में जाकर यह नहीं कह सकते थे, कि वे भेदभाव या नस्लवाद से लड़ना चाहते थे. अमरीकी कानून के अनुसार, वकील उस व्यक्ति का प्रतिनिधि होता है, जिसे किसी प्रकार की हानि हुई हो. वकील, कोर्ट में वकालतनामे के ज़रिये, अपने मुवक्किल की शिकायत पेश करता है. रुथ ने ऐसे कई पुरुषों और महिलायों की पैरवी की, जिन्होंने गलत मान्यताओं और नियमों के कारण, नुकसान और अपमान सहा था, और जहाँ महिलाओं के साथ भेदभाव हुआ था.

1973 में रुथ ने, सुप्रीम कोर्ट में अपने पहले केस की पैरवी की. उस केस के समय रुथ इतनी घबराई हुई थीं कि उन्हें लगा कि वो गिर पड़ेगी. वो केस एक महिला - शेरोन फ्रोंतिएरो का था. वो अमरीकी एयर-फ़ोर्स के मिलिट्री अस्पताल में काम करती थी. एयर-फ़ोर्स के पुरुष अफसरों को अपनी पत्नी और परिवार के लिए मेडिकल भत्ता मिलता था – जिससे वो डॉक्टर या डेंटिस्ट की फीस दे सकते थे. पर महिला अफसरों को अपने पति और परिवार के लिए वो भत्ता नहीं मिलता था. फ्रोंतिएरो की वकील रुथ के तर्क के अनुसार यह अमरीकी संविधान का सरासर उल्लंघन था. संविधान के अनुसार हरेक अमरीकी नागरिक को कानून के हिसाब से, बराबर की सुरक्षा मिलनी चाहिए. इसलिए एयर-फ़ोर्स, फ्रोंतिएरो और अन्य महिला कर्मचारियों के साथ बिना किसी कारण के गैर-बराबरी का व्यवहार कर रहा था.

जब शेरोन फ्रोंतिएरो वो केस जीती, तो वो विजय सिर्फ शेरोन फ्रोंतिएरो की नहीं थी. वो एयर-फ़ोर्स में कार्यरत सभी महिलाओं की जीत थी. वो जीत उन सभी लोगों की थी जो पुरुषों और महिलाओं में समानता और बराबरी चाहते थे. रुथ द्वारा इस केस और अन्य केसों की पैरवी के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अपने नियम बदले. अब अगर सरकार - पुरुषों और महिलाओं में कहीं पर भेदभाव करना चाहती थी, तो उसे उसके बहुत स्पष्ट कारण बताना ज़रूरी था.

रुथ ने समता की लड़ाई लड़ने वाली एक वकील एक्टिविस्ट के रूप में अपना रोल इन शब्दों में स्पष्ट किया:

“मैं जजों को सिखाना चाहती थी कि महिलाओं के बारे में उनकी मान्यताएं गलत थीं. उन गलत धारणाओं के कारण महिलाओं और लड़कियों के लिए अवसर और उनकी आकांक्षायें आदि बहुत सीमित हो रही थीं.”

अनेकों कानून के कॉलेजों में पढ़ाने के बाद, और देश भर में कानूनी केस जीतने के बाद 1980 में रुथ बेडर गिन्सबर्ग, कोलंबिया डिस्ट्रिक्ट में जज बनीं. रुथ और उनका परिवार वाशिंगटन डीसी. शिफ्ट हुए. फिर तेरह साल बाद 1993 में, जज रुथ बेडर गिन्सबर्ग से अमरीकी सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस रुथ बेडर गिन्सबर्ग बनीं. वो पहली यहूदी और दूसरी महिला थीं जो अमरीकी सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस बनीं (1981 में सैन्ड्रा डे ओकूनेर अमरीकी सुप्रीम कोर्ट की पहली जस्टिस नियुक्त हुईं).

जज और जस्टिस की हैसियत से अब रुथ किसी मुवक्किल की पैरवी नहीं कर सकती थीं. पर वो अपने कानूनी मतों और निर्णयों द्वारा निष्पक्षता और बराबरी के लिए सतत रूप से काम करती रहीं. उनके लिए सबसे गर्व की घड़ी तीन साल बाद आई जब वो सुप्रीम कोर्ट गयीं. उस साल सुप्रीम कोर्ट ने वर्जिनिया मिलिट्री इंस्टिट्यूट द्वारा लड़कियों के बहिष्कार का केस सुना. यह एक प्रसिद्ध कॉलेज था जो “नागरिक-सैनिक” बनने का शिक्षण देता था. कॉलेज ने दलील दी कि अगर वो लड़कियों को दाखिला देंगे तो उससे उनका स्कूल नष्ट हो जायेगा.

जस्टिस गिन्सबर्ग ने, वर्जिनिया मिलिट्री इंस्टिट्यूट की दलील से अपनी असहमति जताई. उनका विश्वास था कि लड़कियां भी उस कठिन कोर्स और शारीरिक ट्रेनिंग को अच्छी तरह झेल और सीख पाएंगी, और लड़कियों को उसका पूरा अवसर मिलना चाहिए. लड़कियों का बहिष्कार करना, संविधान में उन्हें दिए बराबरी के अधिकार का उल्लंघन था.

पर उस केस में जस्टिस गिन्सबर्ग को अपनी असहमति नहीं दिखानी पड़ी क्योंकि छह और जज थे जो कि वर्जिनिया मिलिट्री इंस्टिट्यूट से असहमत थे. अंत में जस्टिस गिन्सबर्ग ने अपना मत लिखा - कि वर्जिनिया मिलिट्री इंस्टिट्यूट लड़कियों का बहिष्कार नहीं कर सकता था. उन्होंने लिखा, “आज लड़कियों और महिलाओं को अमरीकी प्रजातंत्र में, पुरुषों जैसा ही सामान दर्ज़ा मिला है.” वो यह भी कह सकती थीं कि इसको दिलाने में, उनका एक वकील की हैसियत से बहुत बड़ा रोल था. पर उन्होंने उसका उल्लेख कहीं नहीं किया. उन्होंने कोर्ट में खड़े होकर अपने निर्णय को संक्षिप्त में पढ़ा और इस तरह बराबरी की एक और मिसाल कायम की.

“उन चीज़ों के लिए लड़ो जो तुम्हें प्रिय
हों और जो तुम्हें चिंतित करती हों.
पर ऐसे लड़ो जिससे और लोग भी
तुम्हारे साथ उस लड़ाई में शामिल हों...”

जस्टिस रुथ बेडर गिन्सबर्ग